नाम – डॉ. मोती लाल शाकार

महाविद्यालय का नाम – दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

संकाय – कला

पदनाम – सहायक प्राध्यापक

विषय – भाषाविज्ञान

शीर्षक – 'भारतीय भाषा चिंतकों के विचार'

भारतीय भाषा चिंतको के विचार

डॉ. मोतीलाल शाकार

सहायक प्राध्यापक

दुर्गा महाविद्यालय

" भारतीय भाषा चिंतको के विचार "

प्रस्तावना : .भारतीय भाषा-विज्ञान आधुनिक युग की देन हैं ! आज इसके इतिहास को सही ढंग से जानने के लिए हमे इसके दो भाग स्वीकार करने पड़ेंगे- प्राचीन युग और आधुनिक युग

प्राचीन युग :

यास्क : यद्दपि आजकल यास्ककृत एक ही निरूक्त उपलब्ध होता है, तथापि उसकी प्रोढ़ शालीसे यह अनुमान करना गलत न होगा कि यह प्रोढ़ कृति एक लुप्त दीर्घ परम्परा कि परिणति है समय के वेय्व्धन से जब वैदिक भाषा क्लिष्ट हो गयी तो संहिताओ के कठिन-कठिन शब्दों का संकलन निघदतु नामक वैदिक कोश में किया गया ऐसा ही एक निघंटु यास्क के निरूक्त के प्रारंभ में जुड़ा है निघंटु में संकलित कुल 1771 शब्दों में से केवल 660 शब्दों का ही विवेचना निरूक्त में किया है,**निरूक्त** आधुनिक भाषा-वैज्ञानिकों के लिए महत्वपूर्ण कृति है इसमें वर्णागम, वर्णविपर्यय,वर्णविकार,वर्ण लोप, आदि स्वर लोप, मध्य स्वर लोप आदि स्वन-विज्ञान,ध्वनि-विज्ञान के प्रमुख सिधान्तो का सोदाहरण परिचय मिलता है आधुनिक भाषाओ कि मान्यता के अनुकूल ही निरूक्त में भी शब्दों को धातुज स्वीकार किया गया हैं इसमें यास्क ने योगिक शब्दों के विवेचन के साथ-साथ प्राचीन पद-विभाग अर्थात् नाम,आख्यात,उपसर्ग को भी अपनाया है।

पाणिनि : पाणिनिकालीन व्यवहार का आगमन निरूक्त के ठीक बाद होता है जिसका कि भाषा-विज्ञान की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है इस युग में व्याकरण के दो उद्देश्य थे - एक था भाषा का शीघ्र बोध कराना और दूसरा भाषा संबंधित समस्त शंकाओ का सामाधन करना इन्हीं दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उस समय अनेक व्याकरण ग्रंथो का प्रचलन हुआ; पर जिस धूमधाम

से प्रचलित हुआ उसी ही धूमधाम से लुप्त भी हो गया यास्क के बाद लगभग 50 व्याकरणों का प्रादुर्भाव हुआ था जिसमे सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण स्थान **पाणिनि**' का माना जाता है।

आपिशली,कश्यप,गागर्य,इंद्र, का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

पाणिनि के काल के संबंध में मतभेद है फिर भी ईसा पूर्व 800 से ईसा पूर्व 400 के मध्य कहीं इनका काल लोग स्वीकार करते है पाणिनि को प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचाने वाला ग्रन्थ है।

पतंजलि : पतंजलियुगिन संस्कृत भाषा बड़ी तीव्र गति से विकसित हो रही थी अतः उसके परिमार्जन कि अत्तयंत आवश्यकता थी पतंजलि ने इस उत्तरदायित्व का निर्वहन गंभीरता पूर्वक किया जन सामान्य के बीच महत्त्व पा रही प्राकृत धीरे धीरे साहित्य में भी स्वीकृत हो चुकी थी इस प्रकार यास्क तथा पाणिनि के समय से चला आता भाषा भेद पतंजलि के समय तक कुछ अधिक बढ़ गया था | पतंजलि के अनुसार विभिन्न प्रदेशो में एक ही अर्थ में अनेक शब्द प्रयुक्त हो रहे थे, जैसे जाना त्रिया के लिए सुराष्ट्र प्रदेश में 'हम्म' प्राच्य-मध्य प्रदेश में 'रह' तथा आर्य प्रदेश में गम धातु का व्यवहार हो रहा था।

ज्यादितय : ज्यादितय और वामन द्वारा लिखित 'काशिका' नामक टीका जो कि पाणिनि के 'अष्टाध्यायी' पर आधारित है सर्वाधिक महत्वपूर्ण है आगे चलकर इस 'काशिका' कि भी टीका निर्मित हुई जिसमे जितेन्द्र बुद्धि कि नयाश अधिक प्रसिद्ध है इसके आगे तो फिर टीकाओं कि भीड़ सी लग गयी भर्तहरिकृत 'महाभास्य दीपिका', कैयटकुत 'महाभास्य प्रतीक' आदि टीकाओं ने भी भाषा-विज्ञान को बहुत कुछ सामग्री विरासत रूप में दी है जहाँ तक भाषा के दार्शनिक अध्ययन का प्रश्न हैं वह भी बहुत कुछ समृद्ध है भर्तहरी का 'वाक्यपदीय',नागेशभट्ट का व्याकरण सिधान्त मंजूबा, कोंडभट्ट का व्याकरण-भूपण आदि ग्रन्थ भाषा के दार्शनिक विवेचन में काफी सहायक सिद्ध हुए है।

कैयट : इसके आगे तो फिर टीकाओं कि भीड़ सी लग गयी भर्तहरिकृत 'महाभाष्य' दीपिका', कैयटकृत 'महाभाष्य प्रतीक' आदि टीकाओं ने भी भाषा-विज्ञान को बहुत कुछ सामग्री विरासत रूप में दी है जहाँ तक भाषा के दार्शनिक अध्ययन का प्रश्न हैं वह भी बहुत कुछ समृद्ध है भर्तहरि का 'वाक्यपदीय',नागेशभट्ट का व्याकरण सिधान्त मंजूबा', कोंडभट्ट का व्याकरण-भूपण आदि ग्रन्थ भाषा के दार्शनिक विवेचन में काफी सहायक सिद्ध हुए है। भर्तहरि कृत 'वाक्यदीप' संस्कृत में लिखी गयी भाषा-तत्व की वह अपुर्वतम कृति है, जिसे पढ़े बिना आज की बहुत-सी भाषा-विज्ञान सम्स्याएँ असमाहित रहेंगी तथा जिसे पढ़कर हम बहुत-सी नई जानकारी पा सकेंगें | भर्तहरि भाषा को दो

बुधियों के माध्य आदान-प्रदान का माध्यम स्वीकार करते है |" उनके अनुसार भाषा बुध्दि की एसी सत्रिय अवस्था है जिसमें श्रोता की बुध्दि वक्ता की बुध्दि के अर्थ को ग्रहण करती है | इसी में भाषा की सार्थकता है | उनके अनुसार वाक्य ही भाषा की इकाई है |

नागेश : नागेश भट्ट या नागोजि भट्ट (1730-1810) संस्कृत के नव्य व्याकरणों में सर्वश्रेष्ठ है | इनकी रचनाएँ आज भी भारत के कोने-कोने में पढाई जाती है | ये महाराष्ट्र के साधू थे ये भट्टोजि दीक्षित के पात्र हरिदीक्षित के शिष्य थे इनके पिता का नाम शिव भट्ट और माता का नाम सतीदेवी था पाणिनीय परम्परा में वरदराज के बाद इन्हीं का नाम लिया जाता है | इन्होंने व्याकरण पर ही प्राय: 10 से अधिक ग्रन्थ लिखे व्याकरण के साथ ही साहित्य,धर्मशास्त्र,दर्शन, योग तथा ज्योतिष विषयों में भी इनकी अबाध गति थी प्रयाग के पास शृंगवेरपुर के राजा रामसिंह इनके आश्रयदाता थे एक जनप्रवाद हैं | कि नागेश भट्ट को सं. 1772 वि. में जयपुर राज में अश्रवमेघ यज्ञ के अवसर पर आमंत्रित किया गया था | उस समय नागेश भट्ट संन्यास ले चुके थे अतएव उन्होंने अश्रवमेघ का निमंत्रण स्वीकार नही किया नागेश के जीवन की क्रमबद्ध सामग्री नही मिलती बालशर्मा,नागेशभट्ट, प्राढ़ शिष्यों में थे उन्होंने मन्नूदेव और हेनरी कोलब्रुक की प्रेरणा से "धर्मशास्त्र संग्रह" नामक ग्रंथ लिखा था इनकी प्रामाणिक शिष्यपरम्परा का अनुमान लगाना कठिन है |

भट्टोजि दीक्षित : भट्टोजि दीक्षित १७वीं शताब्दी में उत्पन्न संस्कृत वैयाकरण थे जिन्होने सिध्दांतकौमुदी की रचना की नाइके परिवार में महान विव्दनौ ने जन्म लिया | इनके भाई रंगोजि भट्ट महान वैयाकरण हुए | रंगोजि भट्ट के पुत्र कौंड भट्ट ने वैयाकरणभूषणसार की रचना की इनका निवासस्थान काशी था | पाणिनिय व्याकरण के अधययन की प्राचीन परिपाटी में पाणिनिय सूत्रपाठ के क्रम को आधार माना जाता था | यह क्रम प्रयोगसिध्दि की दृष्टी से कठिन था क्योंकि एक ही प्रयोग का साधन करने के लिए विभिन्न अध्यायोंके सूत्र लगने पड़ते थे | इस कठिनाई को दिखकर एसी पद्धति के आविष्कार कि आवश्यकता पड़ी जिसमें प्रयोगविशेष की सिध्दि के लिए आवश्यक सभी सूत्र एक जगह उपलब्ध हों | भट्टोजि दीक्षित ने प्रक्रिया कौमुदी के आधार पर सिध्दांतकौमुदी की रचना की | इस ग्रन्थ पर उन्होंने स्वयं प्रौढ़नोरमा टीका लिखी | उनके पौत्र हरि दीक्षित ने प्रौढ़नोरमा पर शब्दरत्न नाम की टीका लिखी | पाणिनिय सूत्रों पर अष्टाध्यायी क्रम से एक अपूर्ण व्याख्या, शब्दकौतुभ तथा वैयाकरणभूषण कारिका भी इनके ग्रन्थ हैं | इनकी सिध्दांत कौमुदी लोकप्रिय है | तत्वबोधिनी, बालमनोरमा इत्यादि सिध्दांतकौमुदी की टीकाएँ सुप्रसिद्ध हैं | उनके शिष्य वरदराज भी व्याकरण के महान पंडित हुए |